ISSN: 2393-8900 IMPACT FACTOR : 2.7825(UIF) VOLUME - 12 | ISSUE - 2 | OCTOBER - 2025

HISTORICITY RESEARCH JOURNAL

पुण्यश्लोका अहिल्यादेवी होल्कर का प्रशासनिक कौशल

डॉ. रामबाबू मेहर
सहायक प्रध्यापक इतिहास,
शासकीय गृह विज्ञान स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
नर्मदापुरम, मध्य प्रदेश.

प्रस्तावना

भारतीय इतिहास में 18वीं शताब्दी को राजनीतिक अस्थिरता, आक्रमणों और साम्राज्यवादी संघर्षों की शताब्दी माना जाता है। औरंगजेब की मृत्यु (1707 ई.) के बाद मुगल साम्राज्य शनैः–शनैः क्षीण होता गया। ऐसे समय में देश में अनेक क्षेत्रीय शक्तियों का उदय हुआ, जिनमें मराठा साम्राज्य का उदय विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इस पृष्ठभूमि में, मध्यप्रदेश के मालवा क्षेत्र का राजनीतिक और प्रशासनिक परिदृश्य भी लगातार परिवर्तनशील रहा था। इसी कालखंड में मालवा के इंदौर में पुण्यश्लोका अहिल्यादेवी होल्कर (1725–1795 ई.) का उदय हुआ, जिन्होंने अपने उत्कृष्ट प्रशासनिक कौशल और न्यायप्रिय नेतृत्व से न केवल मालवा की प्रजा को स्थिरता और सुरक्षा प्रदान की, बल्कि एक आदर्श प्रशासनिक परम्परा की भी स्थापना की। अपने जनकल्याणकारी कार्यों, प्रजा–हितैशी नीतियों और निष्पक्ष शासन व्यवस्था के कारण ही उन्हें "लोकमाता" और "पुण्यश्लोका" जैसी गरिमामयी उपाधियें मिली। इस शोध–पत्र में अहिल्यादेवी होल्कर के प्रशासनिक कौशल का सामान्य विश्लेषण किया गया है। इसमें उनके प्रशासनिक ढांचे, न्यायिक, आर्थिक, सामाजिक और सैन्य नीतियों का अध्ययन किया गया है। साथ ही उनके प्रशासनिक कौशल की प्रमुख विशेषताओं और उसकी आधुनिक प्रासंगिकता पर भी चर्चा की गई है।

शब्द संकेत :– अहिल्यादेवी होल्कर, मालवा प्रांत, प्रशासन, जनकल्याण।

उदेद्श्य

1. इस शोध पत्र का उदेद्ष्य लोकमाता अहिल्यादेवी होल्कर के प्रशासनिक कौशल को सामने लाना है।
2. इस शोध पत्र में कुछ अनछूए पहलुओं पे प्रकाश डालने का कार्य किया गया है।

अहिल्यादेवी होल्कर के प्रशासन की अवधारणा–प्रशासन केवल सत्ता प्रयोग का माध्यम नहीं है, बल्कि यह व्यवस्था, सुरक्षा और न्याय सुनिश्चित करने का तंत्र भी है। सम्पूर्ण 18वीं शताब्दी के भारत में प्रशासन की सबसे बड़ी चुनौतियाँ थीं :–

1. राजनीतिक अस्थिरता और आंतरिक संघर्ष।
2. विदेशी आक्रमण और लूट।
3. आर्थिक शोषण एवं व्यापारिक संकट।
4. किसानों और प्रजा की सुरक्षा एवं पुनर्वास

अहिल्यादेवी होल्कर के प्रशासन का ढांचा – मराठा प्रशासन में महिलाएँ सामान्यतः पर्दे के भीतर रहकर कार्य करती थीं, परंतु अहिल्यादेवी ने इस तरह के सामाजिक बंधनों को तोड़ते हुए एक आदर्श और मजबूत प्रशासिका के रूप में अपनी छवि स्थापित की। अहिल्यादेवी की प्रशासनिक व्यवस्था की अवधारणा इस मायने में अद्वितीय थी कि उसमें "प्रजा ही परिवार है" का भाव सबसे आगे था। क्योंकि प्रजा हित के अनेक कार्यों से इसकी झलक मिलती है। उनके प्रशासन का मूल आधार न्याय, धर्म और प्रजा–हित था। उन्होंने अपने शासन को कई स्तंभों पर खड़ा किया :–

1. न्याय व्यवस्था–न्याय में निष्पक्षता और त्वरित निर्णय।
2. आर्थिक नीति–कराधान में संतुलन, व्यापार को प्रोत्साहन, अवसंरचना का विकास।
3. सामाजिक नीति–महिलाओं और वंचित वर्गों का संरक्षण।
4. सैन्य नीति–सीमाओं की सुरक्षा और आवश्यकतानुसार युद्ध कौशल का प्रयोग।

अहिल्यादेवी की सबसे बड़ी पहचान उनके न्यायप्रिय शासन से जुड़ी है। वे प्रतिदिन दरबार में बैठकर जनता की समस्याएँ सुनती थीं। उनके निर्णय निष्पक्ष होते थे और किसी भी प्रकार का पक्षपात नहीं होता था। न्यायालय में किसी भी व्यक्ति की पहुँच आसान थी, चाहे वह अमीर हो या गरीब। उन्होंने भ्रष्टाचार और झूठे मुकदमों पर कठोर नियंत्रण रखा। इतिहासकारों के अनुसार, अहिल्यादेवी ने अपने शासन में न्याय को सर्वोपरि स्थान दिया। यही कारण है कि जनता उन्हें "माता" कहकर संबोधित करती थी।

अहिल्यादेवी के प्रशासनिक कौशल का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष उनका आर्थिक प्रबंधन था।

1. कर प्रणाली–उन्होंने कराधान को न्यायसंगत बनाया। किसानों पर अत्यधिक बोझ न डाला जाए, इसका विशेष ध्यान रखा। सूखा अथवा आपदा के समय कर माफ कर दिया जाता था।
2. कृषि सुधार–किसानों को सिंचाई की सुविधा देने के लिए कुएँ, तालाब और नहरें बनवाईं।
3. व्यापार को प्रोत्साहन–व्यापारियों को सुरक्षा प्रदान की और व्यापारिक मार्गों को सुरक्षित बनाया।
4. अवसंरचना का निर्माण–सड़कों, पुलों, धर्मशालाओं, मंदिरों और घाटों का निर्माण कराया। इससे न केवल धार्मिक गतिविधियों को बल मिला, बल्कि व्यापार और सामाजिक जीवन भी सशक्त हुआ।
5. तीर्थस्थलों का पुनर्निर्माण–काशी विश्वनाथ, सोमनाथ, गया, रामेश्वरम् जैसे कई स्थलों पर मंदिरों का निर्माण कराया और अनेक स्थानों पर मंदिरों व इमारतों का जीर्णोद्धार कराया। इसे केवल धार्मिक दृष्टि से नहीं, बल्कि सांस्कृतिक–आर्थिक दृष्टि से भी समझा जाना चाहिए, क्योंकि इससे पर्यटन और व्यापार दोनों को लाभ हुआ।

अहिल्यादेवी के सम्पुर्ण कार्यकाल में हम देखते हैं कि वे सामाजिक दृष्टिकोण को सर्वोपरि रखती थीं तथा सर्वसमावेशी विचारों के साथ कार्यों को संपादित करती थीं। वे स्वयं एक महिला शासक थीं, इसलिए उन्होंने समाज में स्त्रियों की स्थिति को बेहतर बनाने पर बल दिया। विधवाओं और परित्यक्त स्त्रियों को आश्रय प्रदान किया। अहिल्यादेवी ने हिंदू धर्म को ही नहीं, बल्कि उनके राज्य में सभी धर्मों के प्रति सम्मान दिखाया। उन्होंने विद्वानों, कवियों और कलाकारों आदि को भरपूर संरक्षण प्रदान किया। धर्मशालाओं और विश्रामगृहों का निर्माण कराया ताकि यात्रियों और गरीबों को सुविधा मिल सके।

यद्यपि अहिल्यादेवी स्वभाव से युद्ध प्रिय नहीं थीं, फिर भी उन्होंने आवश्यकता पड़ने पर सेना का कुशल नेतृत्व किया। उन्होंने सेना को अनुशासित और संगठित रखा। राज्य की सीमाओं की रक्षा के लिए रणनीतिक दृष्टिकोण अपनाया। आंतरिक विद्रोहों और बाहरी आक्रमणों का दृढ़ता से सामना किया। उनके शासनकाल में मालवा अपेक्षाकृत सुरक्षित और शांतिपूर्ण रहा।

प्रशासनिक कौशल की विशेषताएँ

अहिल्यादेवी के प्रशासनिक कौशल को निम्न विशेषताओं से समझा जा सकता है :–

1. दूरदर्शिता, उन्होंने केवल तत्कालीन समस्याएँ हल नहीं कीं, बल्कि भविष्य की जरूरतों का भी ध्यान रखा।
2. न्यायप्रियता, उनका शासन न्याय और समानता पर आधारित था।
3. जनता–केन्द्रित दृष्टिकोण, उन्होंने हमेशा प्रजा को परिवार की तरह माना।

4. नैतिकता और सेवाभाव, व्यक्तिगत लाभ से ऊपर उठकर प्रजा की सेवा को प्राथमिकता दी।
5. संतुलित नीति, धर्म, अर्थ और समाज के बीच संतुलन स्थापित किया।

समकालीन काल के अन्य शासकों से अहिल्यादेवी का प्रशासन कई मायनों में श्रेष्ठ था। जहाँ अन्य शासक सत्ता विस्तार और युद्ध में व्यस्त थे, वहीं अहिल्यादेवी ने प्रजा–हित पर ध्यान केंद्रित किया। उनके प्रशासन में धार्मिक सहिष्णुता और सर्वसमावेशी दृष्टिकोण देखने को मिलता है। उनका आर्थिक प्रबंधन और सामाजिक न्याय आज के Good Governance Model से मेल खाता है।

निष्कर्ष

अहिल्यादेवी होल्कर का प्रशासन भारतीय इतिहास में अद्वितीय है। उन्होंने एक महिला होते हुए भी यह सिद्ध किया कि सच्चा नेतृत्व शक्ति–प्रदर्शन में नहीं, बल्कि प्रजा–हितैशी और न्यायपूर्ण शासन व्यवस्था की स्थापना में निहित होता है। उनके प्रशासनिक कौशल की विशेषताएँ, न्यायप्रियता, दूरदर्शिता, आर्थिक कुशलता, सामाजिक सुधार और धार्मिक सहिष्णुता आज भी प्रासंगिक हैं। इसीलिए उन्हें "लोकमाता" और "पुण्यश्लोका" की उपाधि दी गई। उनका प्रशासनिक मॉडल आधुनिक भारत के सुशासन का सबसे बढ़ा स्त्रोत है।

अध्ययन किए गए संदर्भ :–

1. देषपांडे, प्राची–क्रियेटिव्ह पास्ट, हिस्टॉकरिकल मेमोरी एंड आइडेंटिटि इन वेस्टर्न इंडिया, 1700–1960 ई., कोलंबिया यूनिवर्सिटि प्रेस, 2007
2. गोखले, बालकृष्ण गोबिंद–अहिल्याबाई होल्कर एंड हर टाइम्स, दि इंडियन हिस्टॉरिकल रिव्यु, वॉल्यूम–5, नं–2, 1978
3. बर्वे, मुकुंद वामनराव–देवी अहिल्याबाई, होल्कर स्टेट, इंदौर, 1922
4. रानाडे मीना, एवं पई, अनंत– अहिल्याबाई, होल्कर : क्वीन ऑफ मालवा, अमर चित्रकथा, प्रा. लि., इंडिया, 1971
5. जांगीरदार, विजया– कर्मयोगी : लाईफ ऑफ अहिल्याबाई, होल्कर, मेहता पब्लिशिगं हाउस, न्यू देल्ही, 2017 (अनुवादित)
6. जावलेकर, अरविंद– लोकमाता अहिल्याबाई, प्रभात प्रकाशन, न्यू देल्ही, 2024
7. कुमार, प्रितेश एवं झा, वंदना– दि लोकमाता : लाईफ एंड लेगेसी ऑफ देवी अहिल्याबाई होल्कर, गरुड़ प्रकाशन, दिल्ली